Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 9 | September 2023



संस्कृति एवं जीवन मूल्य में बदलाव-एक तुलनात्मक अध्ययन

Dr. J Ajitha Kumari

Assistant Professor, Department of Hindi, Nirmala College, Muvattupuzha

INTRODUCTION

तुलना करना प्रत्येक मनुष्य की वह सामान्य प्रवृत्ति है जिसे वह अनजाने अनजाने ही जिंदगी के हर एक पल में प्रत्येक पहलू में करता है। ज्ञान को पूर्ण रूप से अर्जित करने के लिए,सोच को विशाल बनाने के लिए,एक से अधिक वस्तुओं अवस्थाओं से गुजर ना आवश्यक ही है। तुलना प्रत्येक वस्तु के महत्व एवं सीमाओं से वाकिफ कराने के साथ–साथ व्यक्ति की सोच एवं जीवन नीति में सुधार लाने में अपनी छाप जरूर छोड़ता है। तुलनात्मक साहित्य साहित्य के अर्थ में विस्तार करता है। साहित्य का मूल अर्थ से हटकर यानी वाङ्मय/काव्या/साहित्य की किसी विधा विशेष से परे,साहित्य अपना विशेष अर्थ त्याग कर किसी भी विषय की सामग्री के अर्थ के रूप में प्रस्तुत होता है।

भारत की संस्कृति में सब कुछ है जैसे विरासत के विचार,लोगों की जीवन शैली,मान्यताएं, रीति रिवाज, मूल्य, आदतें, विनम्रता, ज्ञान, आदि। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता है जहां लोग अपनी पुरानी मानवता की संस्कृति और परवरिश का अनुकरण करते हैं। संस्कृति दूसरों से व्यवहार करने का,सौम्यता से चीजों पर प्रतिक्रिया करने का, मूल्यो के प्रति हमारी समझ का, न्याय ,सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का एक तरीका है।

पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को नई पीढ़ी को सुनते हैं। इसलिए सभी बच्चे यहां पर अच्छे से व्यवहार करते हैं क्योंकि उनकी यह संस्कृति और परंपराएं पहले से ही उनके माता–पिता और दादा–दादी से मिले होते हैं। यहां प्रत्येक चीज में भारतीय संस्कृति की झलक है,जैसे नृत्य, संगीत, कला, व्यवहार,भोजन हस्तशिल्प, वेशभूषा, आदि। भारत एक बड़ा पिघलने वाला बर्तन है जिसके पास विभिन्न मान्यताएं और व्यवहार है जो कि अलग–अलग संस्कृतियों को यहां जन्म देता है।

स्वतंत्र भारत की संस्कृति को सुरक्षित करने वाली तीन विशेषताएं हैं–दीदी छाता, लोकतंत्र तथा समाज का माहौल द्यदुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में प्रसिद्ध भारत की विविधता में एकता,,भाईचारा अहिंसा, सच्चाई, धर्मनिरपेक्षता आदि भी सराहनीय रहे द्य भारतीय संस्कृति नैतिकता,धर्म,दर्शन, साहित्य, काला और जीवनशैली में जुड़ी होती है। लेकिन आज पूंजीवादी सभ्यता से रिश्ता जोड़ने के कारण उसकी निजता में मिलावट आ गया है। इससे भारतीय संस्कृति में मौलिक परिवर्तन आ गया है। उपभोग वादी संस्कृति हमारी राष्ट्रीय संस्कृति को नष्ट करने का कारण बन रही है। जो संस्कृति हमें स्वाधीनता आंदोलन और फिर राष्ट्र निर्माण के प्रयासों से विरासत के रूप में मिली थी,आज की अवस्था में एक संस्कृति शून्य सा पैदा हो रहा है और उसने अंधा बाजारवाद,उपभोक्तावाद , वगैरह बढ़ रहा है ।

भारतीय संस्कृति पर भूमंडलीकरण का गहरा प्रभाव होता जा रहा है। विरासत के रूप में मिली संस्कृति के तत्व बदलते जा रहे हैं। विश्व में अनेक संस्कृतियों है जो एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। विश्व की कई संस्कृतियों भौतिकता के पीछे पागल होती जा रही हैं इसलिए दमन और अत्याचार उनका स्वभाव बनता जा रहा है। पुरुषोत्तम अग्रवाल कहते हैं कि "भारतीय संस्कार से उपजी संस्कृति सनातन काल से ही धर्म आधारित रही है ,जबकि अन्य संस्कृतियों के केंद्र में है शक्ति पावर की अवधारणा। भारतीय संस्कृति मोक्ष की खोज करती है, इसलिए उसमें नहीं धर्म भावना दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों ,दायित्व का निर्वाह करने में मूर्त रूप लेती है। "

बाजारवाद,उपभोक्तावाद का आगमन भारतीय संस्कृति हास का कारण बना। भूमंडलीकरण के प्रभाव से जो नव संस्कृति उपहर रही है उसने दोनों संस्कृतियों का प्रभाव देखा जा सकता है। आज नई पीढ़ी को हमारे देश की हर बात हीन लगने लगी है। भूमंडलीकरण की अर्थनीति बुनियादी मानवीय संबंधों को कुछ खास दिशा में ले जा रही है।

भारत के लोगों की जीवन दीदी सरल जीवन को महत्व देने वाली थी। वही लोग आज उपभोग वस्तुओं को जुटाना अपना जीवन लक्ष्य बना चुके हैं। विदेशी शिक्षा ने भारत में मध्यवर्ती की सृष्टि की थी। वही मध्यवर्ग आज अपनी खरीद क्षमता के आधार पर उच्च वर्ग बनने की कोशिश में है। उपभोग संस्कृति के प्रभाव से लोग भौतिक वस्तुओं के मोह जाल में फंस गए हैं। लीलाधर मंडलोई के शब्द यहां उल्लेखनीय है: "मीडिया की आम संवेदना शून्य है,और मस्तिष्क में बाजार, जो अपने लाभ के लिए मनुष्य को नागरिक से ग्राहक और ग्राहक से गुलाम बनाने की नीति पर ही निर्मित है।" वस्तुतः मीडिया मनुष्य के लिए काम और बाजार के लिए ज्यादा समर्पित है। सुख सुविधाओं के अन्य अनियंत्रित उपभोग में मनुष्य स्वयं गुलाम बनने की होड़ में है।

उत्तर आधुनिक संस्कृति भोगो – फेंको के तत्व पर टिकी हुई है। इसे संस्कृति ना कहकर को संस्कृति कहा जाए तो बेहतर होगा। इसने व्यक्ति परिवार एवं समाज के संतुलन को बिगाड़ दिया है । आज के जमाने में पैसा बोलता है। बाजारवाद ने व्यक्ति व समाज को अपने चंगुल में फंसा लिया है। असीम धन के चकाचौंध ने महानगरीय जीवन में संस्कृति के स्थान पर संस्कृति पैदा की है।

प्रसिद्ध कहानी की नायिका 37 साल की शिखा है। ब्राह्मण परिवार की होने के बावजूद पर ज्यादा सुंदर या आकर्षक नहीं थी। वह रेलवे में काम करती थी और पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसके कंधे पर थी। उसका बड़ा भाई शादीशुदा था और उसने अलग जगह गृहस्ती बनाई थी। घरवाले शिखा के बड़े भाई को ज्यादा प्यार करते थे और शिखा को लड़की होने के कारण बोझ समझते थे। रंग, रूप , दहेज सब उसकी शादी में देरी ला रहे थे। ऐसे में उसे अपने ऑफिस में काम करने वाले शेखर से प्यार हो जाता है । शेखर शिखा से काफी अलग था। काफी मिलनसार व्यक्ति है जो हर किसी से जल्दी दोस्ती बनाता है वह हमेशा शिखा का ख्याल भी रखता है। शिखा को जिंदगी ने दूसरा मौका दिया था,पर यह मौका ज्यादा दिन नहीं टिका क्योंकि शेखर का इरादा गलत था । उसने शिखा से लोन लेकर अपना फ्लैट खरीदा,अपनी जिंदगी सुधारी और बाद में सिखा से दूरी रखने लगा। शिखा की हालत पहले से भी बदतर हो गई पर उसने खुद को किसी तरह संभाला। कहानी के अंत तक आते–आते शेखर उनके ऑफिस के क्लर्क से यू कहता है: ".घर की मुर्गी दाल बराबर है जनाब.... उसे कौन मुंह लगाए......मुझे मतलब है पैसों से। कुछ ही दिनों में बहाना बनाकर तलाक लेंगे। कौन सी उससे जिंदगी गुज़ारनी है। " शिखा उसकी यह बात सुनती है और मृत शरीर सा रह जाती है। कहानी के जरिए कहानी का जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए छोटे प्रेम का बहाना बनाकर दूसरों के दिल से खेलने वाले स्वार्थी मनुष्य का चित्रण करते हैं। पैसों का लालच व्यक्ति से उसकी आत्मा को भी छीनता है। झूठ और धोखे से बना रिश्ता कभी नहीं टिक पाता ,बहुत धागा इतना कच्चा होता है कि काफी जल्दी टूट जाता है।

प्रेम संबंधों को अलग तरीके से हमारे समक्ष अपनी में मलयालम कहानियां भी खरी उतरती हैं। संतोष एच्चिक्कानम जी का 'दिनोसरिड़े मुट्टा' इसमें उल्लेखनीय हैं। इसमें आग्नसऔर बालचंद्र एक दूसरे से असीम प्यार करते हैं और उनकी शादी भी होती है,मगर जब शादी के बाद आग्नस के पांव भारी पड़ते हैं तब वह बेचैन हो जाती है।

हालांकि भी दोनों इतनी जल्दी बचा नहीं चाहते थे पर बालचंद्र इससे खुश था मगर यह बात आग्नस की दिमागी हालत को ही तहस–नहस कर देती है। मां बनने की खुशी के बजाय वह हमेशा चिंतित रहती है। उसे अपनी और अपने पति की जाति एवं उसके धर्म से डर लगने लगता है। सरल भाषा में वह बच्चा नहीं चाहती। अंत में बारिश है उसे पागलखाने भेजने के लिए मजबूर हो जाता है। आग्नस का भारत चंद्र से यह कहनाः "हमें थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए थी ना। आज जाति धर्म पहले से भी ज्यादा सशक्त हैं।" आग्नस की मन की व्यथा दर्शाने के लिए काफी हैं। आग्नस को उसके आठवे महीने चलते पागलखाने में ले जाया जाता है। तब अपने पेट को देख कर बालचंद्र से कहती हैः "बालचंद्र क्या तुम उसे ठंडा कर सकते हो। ताकि यह कभी भी धरती पर ना आ सके। उसके बाद तुम मुझे किसी म्यूजियम में रख दो द्य" यहां एक और दो जाति और धर्म को लेकर उसके मन में जो ढेर है उसे दिखाया गया है वहीं दूसरी और वर्तमान समाज में फैल रही एक ऐसी सोच पर भी प्रकाश डाला है जिसमें बच्चा होना,जिम्मेदार, सारी बातें तुझसे समझी जाती हैं। प्यार का मतलब आज सिर्फ और शादी करने तक सीमित हो गया है। बच्चा होना,मां बाप बनना,एक संपूर्ण परिवार बनाना,यह सब आज तुच्छ अवस्था मानी जाती है। सभी लोग नहीं मगर यह सोच वाले व्यक्ति आज विद्यमान है । बदलते समाज,संस्कृति और मूल्य ने मनुष्य को इस तरह अंधा कर दिया है कि वह परिवार नहीं महस प्यार चाहता है। वह प्यार जिसमें जिम्मेदारी का भाव ना हो।

सांस्कृतिक बदलाव या परिवर्तन जरूरी है पर वह समय और मांग के आधार पर ही होना चाहिए। ऐसा बदलाव व्यक्ति और समाज के अनुकूल होना चाहिए। ठीक समय पर,ठीक रही थी से किया गया परिवर्तन समाज और व्यक्ति के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा और गलत समय पर दिखावे के लिए किया गया परिवर्तन बुरा असर ही लाएगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. भूमंडलीकरण के दौर में समाज और संस्कृति –सुरेश पंडित
2. बाजारवाद में हिंदी–प्रभाकर श्रोत्रिय
3. हिंदी कहानी संग्रह– कराड जना शिवाजीराव
4. मलयालचेरुकथा साहित्य चरित्रम– डॉ.एम.एम. बषीर